शहीद दुर्गा मल्ल

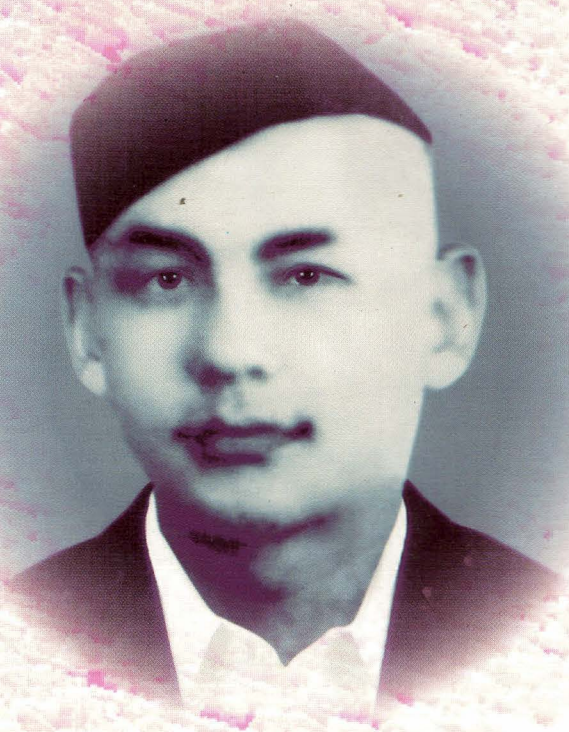

लोक सभा सचिवालय
नई दिल्ली
दिसम्बर 2004

शहीद दुर्गा मल्ल

लोक सभा सचिवालय
नई दिल्ली
दिसम्बर 2004

9 (2)–लार्डिस (पोल)/2004

© 2004 लोक सभा सचिवालय

लोक सभा के प्रक्रिया तथा कार्य संचालन नियम (ग्यारहवां संस्करण) के नियम 382 के अंतर्गत प्रकाशित तथा जैनको आर्ट इंडिया, 13/10, डब्ल्यू.ई.ए., सरस्वती मार्ग, करोल बाग, नई दिल्ली-110 005 द्वारा मुद्रित।

आमुख

शहीद दुर्गा मल्ल का उन अमर शहीदों में एक विशेष स्थान है जिन्होंने भारत में ब्रिटिश शासन को चुनौती दी तथा देश के कोन-कोने में युवकों और युवतियों के दिलों में अंग्रेजों की दासता से मातृभूमि को मुक्त कराने के लिए अपना जीवन समर्पित करने का क्रांतिकारी जज्बा जगाया।

यह कृतज्ञ राष्ट्र 17 दिसम्बर 2004 को शहीद दुर्गा मल्ल की स्मृति में सम्मान व्यक्त कर रहा है, जब माननीय प्रधानमंत्री, डा. मनमोहन सिंह संसद भवन परिसर में उनकी प्रतिमा का अनावरण करेंगे। हम माननीय लोक सभा अध्यक्ष श्री सोमनाथ चटर्जी के अति आभारी हैं जिन्होंने इस समारोह के आयोजन में प्रेरक मार्गदर्शन किया।

हम शहीद दुर्गा मल्ल की प्रतिमा भेंट स्वरूप प्रदान करने के लिए दार्जिलिंग, पश्चिम बंगाल स्थित भारतीय गोरखा परिसंघ की अध्यक्ष, श्रीमती दिल कुमारी भंडारी के आभारी हैं। यह प्रतिमा विख्यात मूर्तिकार श्री गौतम पाल द्वारा बनाई गई है।

इस अवसर पर लोक सभा सचिवालय यह पुस्तिका प्रकाशित कर रहा है जिसमें शहीद दुर्गा मल्ल का जीवनवृत्त दिया गया है। आशा है कि यह पुस्तिका सभी के लिए उपयोगी और ज्ञानप्रद सिद्ध होगी।

नई दिल्ली
दिसम्बर, 2004

गुरदीप चन्द मलहोत्रा
महासचिव
लोक सभा

विषय-सूची

पृष्ठ

आमुख ..... (i)

शहीद दुर्गा मल्ल—जीवनवृत्त

उनका परिवार और प्रारंभिक जीवन 1

द्वितीय विश्व युद्ध में भाग लेना 3

आजाद हिन्द फौज में भूमिका 4

युद्ध के मोर्चे पर 4

युद्धबंदी और मुकदमा 5

प्राणों की आहुति 5

शहीद दुर्गा मल्ल—चित्रात्मक झांकी 7

शहीद दुर्गा मल्ल

-जीवनवृत्त-

असंख्य गोरखाओं ने हमारे प्यारे देश के लिए युद्ध किया है और अपना जीवन बलिदान किया है। स्वतंत्रता संग्राम से लेकर करगिल की चोटियों तक गोरखा हमारे देश की रक्षा में अग्रणी रहे हैं। शहीद दुर्गा मल्ल उन्हीं अग्रणी गोरखा नायकों में से हैं जिन्होंने हमारे देश की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी। वह भारतीय गोरखाओं की संघर्ष तथा अनन्य देशभक्ति की भावना के प्रतीक थे।

उनका परिवार और प्रारंभिक जीवन

उत्तरांचल में देहरादून जिले के गांव डोईवाला में 1 जुलाई 1913 को जन्मे दुर्गा मल्ल पार्वती देवी और गंगा राम मल्ल के चार पुत्रों में ज्येष्ठ थे। गंगा राम मल्ल सेना में गोरखा राइफल्ज के जमादार (जिन्हें अब नायब-सूबेदार कहा जाता है) थे तथा पार्वती देवी एक गृहिणी थीं। समय के साथ-साथ इस परिवार में तीन पुत्र तथा तीन पुत्रियां और हुईं। चारों भाइयों से सबसे बड़े दुर्गा मल्ल अत्यधिक स्वाभिमानी, मेहनती, समर्पित और ईमानदार थे।

दुर्गा मल्ल के पूर्वज अठारहवीं शताब्दी से डोईवाला क्षेत्र मे बसे हुए थे। उनका मुख्य व्यवसाय कृषि तथा सैन्य बलों में सेवा था। गन्ने की फसल उगाकर गुड़ और चीनी तैयार करना तथा उन्हें बाजार में बेचना भी उनके व्यवसाय का एक भाग था।

बचपन से ही दुर्गा मल्ल अपनी आयु के अन्य बालकों से भिन्न स्वभाव के थे। खेलकूद और विशेषकर, फुटबाल में गहन रुचि के साथ-साथ दुर्गा मल्ल को साहित्यिक और सामाजिक गतिविधियों में भी गहरी रुचि थी। वह पढ़ाई में बहुत अच्छे थे किंतु डोईवाला क्षेत्र में समुचित शैक्षणिक सुविधाएं न होने के कारण उन्हें गोरखा मिलिट्री मिडिल स्कूल में दाखिला लेना पड़ा जो वर्तमान में देहरादून के निकट स्थित गोरखा मिलिट्री इन्टर कालेज के नाम से जाना जाता है। चूंकि स्कूल डोईवाला से काफी दूर था, इसलिए वह नालापानी में अपने चाचा केदार मल्ल के घर आ गए। वह अपने एक दो मित्रों के साथ रोजाना 8-9 मील का रास्ता पैदल तय करके स्कूल जाया करते थे। देर शाम घर लौटने पर थके होने के बावजूद वह पढ़ाई की कभी भी उपेक्षा नहीं करते थे और अपनी कक्षा में सदैव प्रथम आते थे।

दुर्गा मल्ल को कवि तथा समाज-सुधारक सूबेदार-मेजर बहादुर सिंह बराल तथा संगीतज्ञ और नाटककार मित्र सेन थापा से प्रेरणा मिली। वह देहरादून के विख्यात गांधीवादी स्वतंत्रता सेनानियों यथा ठाकुर चन्दन सिंह, वीर खड़गबहादुर सिंह बिष्ट, पंडित ईश्वरानंद गोरखा और अमर सिंह थापा से अत्यधिक प्रभावित थे। वर्ष 1930

में महात्मा गांधी जी द्वारा 'नमक कानून' का उल्लंघन करने के लिए शुरू किए गए दांडी मार्च से दुर्गा मल्ल के हृदय में देशभक्ति की भावना जन्म लेने लगी जिसने उन्हें स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। वह महात्मा गांधी के नेतृत्व में भारत की आजादी का स्वप्न देखते थे।

सत्याग्रह आंदोलन के समय दुर्गा मल्ल मात्र नौवीं कक्षा के छात्र थे लेकिन वह अपने क्षेत्र में ब्रिटिश विरोधी गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेते थे। वह गोरखा बटालियन क्षेत्र में स्वतंत्रता संग्राम के पोस्टर चिपकाने के लिए रात के समय अपने कुछ मित्रों के साथ प्रवेश किया करते थे। कई बार वह स्वतंत्रता सेनानियों के साथ जुलूसों में भी हिस्सा लेते थे। उनकी ब्रिटिश विरोधी गतिविधियों के कारण ब्रिटिश सरकार उनके परिवार से प्राय: अत्यधिक पूछताछ किया करती थी।

सन् 1930 में दुर्गा मल्ल अल्हड़ युवक थे। वह गोरखा समाज की दुर्दशा देखकर सदैव चिंतित और बेचैन रहते थे। उनके द्वारा रची गई कविता, जिसे "भाक्सु" के कवि एवं लेखक-संपादक मगन 'पथिक' के द्वारा लिखित पुस्तक 'ठाकुर चन्दन सिंह' से उद्धृत किया गया है, की इन पंक्तियों से उनके हृदय के अंदर का स्वाभिमान छटपटा कर व्यक्त होता है--

"दिखाओ आकर भगवान सुषुप्त जाति को राह।
क्या हुआ हमें, क्यों हुई आज मति मन्द॥

वीरता, पौरुष के कारण मिली वीर गोरखा की उपाधि।
जो हीरे के समान था उज्जवल, क्यों हुआ माटी-तुल्य॥

आज देखकर यह, कुछ कह नहीं सकता।
कब जानेंगे यह अपने कर्त्तव्य, सभी के उड़े हैं होश॥

कैसा मिला जन्म इन्हें, बदल गये सारे।
करते हैं अपनों की चुगली, प्यार बांटने के बदले॥

चली गई पुरखों की प्रतिष्ठा, जाति हुई बदनाम।
सिर्फ़ बचा है मानव चोला, क्यों बनाते हो माटी।।

दुर्गा लिख रहा है लेख, प्रभु चूर करो इनका दर्प।
नेत्र हों, तो अब भी देखो, अन्य लोगों की चलने की राह॥

दुर्गा मल्ल देश की पराधीनता और दयनीय दशा के प्रति भी अत्यंत चिंतित थे। इसलिए, वह अंग्रेजों की इस पराधीनता की जंजीरों को तोड़कर देश को स्वतंत्र कराने

के लिए स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े। यह वह समय था जब देहरादून में पुलिस स्वतंत्रता सेनानियों को जोर-शोर से गिरफ्तार कर रही थी। परिणामस्वरूप, स्वतंत्रता सेनानी देहरादून छोड़कर अन्यत्र जाने लगे। दुर्गा मल्ल जो उन दिनों छात्र ही थे, पुलिस की आंखों में धूल झोंकने के उद्देश्य से अपने एक संबंधी के घर हिमाचल प्रदेश में धर्मशाला पहुंच गए।

वर्ष 1931 में मात्र 18 वर्ष की आयु में वह गोरखा राइफल्स की 2/1 बटालियन में भर्ती हो गए। अपनी बटालियन में दुर्गा मल्ल अपेक्षाकृत शिक्षित रंगरूट थे। अत: उन्हें 'रंगरूट प्रशिक्षण' के बाद 'सिग्नल प्रशिक्षण' के लिए पुणे भेजा गया। समय के साथ उन्होंने कई अन्य सैन्य प्रशिक्षणों में उत्कृष्टता हासिल कर ली। उनकी समर्पित और कुशल सेवाओं के कारण उन्हें शीघ्र पदोन्नतियां प्राप्त हुईं और कुछ वर्षों बाद उन्हें सिग्नल हवलदार के महत्वपूर्ण पद पर पदोन्नत कर दिया गया।

वर्ष 1941 में सेना की लगभग 10 वर्ष की सेवा के बाद दुर्गा मल्ल का विवाह हिमाचल प्रदेश में कांगड़ा जिले के ठाकुरी परिवार की कन्या शारदा देवी के साथ हुआ। किंतु उनके भाग्य में कुछ और ही लिखा था। यह द्वितीय विश्वयुद्ध का समय था। बर्मा, मलाया और सिंगापुर में जापानी आक्रमण बहुत उग्र हो गए थे। गोरखा राइफल्स की 2/1 बटालियन को भी युद्ध-क्षेत्र की ओर कूच करने का आदेश दिया गया। अत: विवाह के मात्र तीन दिन पश्चात् दुर्गा मल्ल को अपनी यूनिट से तत्काल हाजिर होने का संदेश प्राप्त हुआ। इससे पहले कि नवविवाहिता शारदा देवी उनके साथ भली-भांति परिचित हो पातीं, उन्हें सेना ने युद्ध के लिए बुला लिया।

द्वितीय विश्व युद्ध में भाग लेना

एक सच्चे देशप्रेमी होने के नाते दुर्गा मल्ल अपनी नवविवाहिता पत्नी को घर पर अकेला छोड़कर जाने से व्याकुल नहीं हुए। उन्होंने अदम्य साहस के साथ युद्ध क्षेत्र की ओर कूच किया। जब उनकी बटालियन सिकन्दराबाद पहुंची तो उन्हें 28 दिन का अवकाश दिया गया और मलाया के लिए रवाना होने से पहले अपने घर जाकर परिवारजनों से मिलने का अवसर दिया गया। सिकन्दराबाद से उनकी बटालियन बम्बई पहुंची और 23 अगस्त 1941 को बम्बई पत्तन से मलाया के लिए रवाना हो गई। सितम्बर 1941 तक सभी गोरखा बटालियन मलाया पहुंच गई थीं। दक्षिण-पूर्व एशिया में तैनात मित्र देशों की सेनाओं पर जापान द्वारा 8 दिसम्बर 1941 को आक्रमण किए जाने के साथ युद्ध की घोषणा कर दी गई। 11 दिसम्बर 1941 तक अंग्रेजी फौजों की हालत पतली हो गई थी। धीरे-धीरे जापानी फौजों ने युद्ध पर अपनी पकड़ मजबूत कर ली।

ब्रिटिश शासन के इतिहास में भारतीय सेनानियों ने अपने आपको कभी इतना हतोत्साहित महसूस नहीं किया, जितना मलाया और बाद में दक्षिण-पूर्व एशिया के अन्य स्थानों में। दिसम्बर 1941 में भारतीय सैनिकों की एक टुकड़ी जंगल में भटक गई। उनके एक अधिकारी कप्तान मोहन सिंह ने पीछे हटती हुई अंग्रेजी फौजों में वापिस न जाने का निर्णय लिया। उन्होंने विचार किया कि अंग्रेजों के लिए लड़ने से भारतीय सैनिकों को कुछ नहीं मिलेगा वरन् उन्हें जापानियों का साथ देते हुए अंग्रेजों से लोहा लेना चाहिए। इस उद्देश्य को जेहन में रखकर वह जापान के मेजर फुजीवारा से मिले जिन्होंने उन्हें आश्वस्त किया कि जापान स्वातंत्र्य आंदोलन में भारत की सहायता करेगा। मेजर फुजीवारा ने यह घोषणा भी की कि ब्रिटिश सरकार की तरफ से उसके अफसर कर्नल हंट ने जिन भारतीय युद्धबंदियों को जापान सरकार को सौंपा है, वे कैप्टन मोहन सिंह के अधीन रहेंगे।

दक्षिण-पूर्व एशिया में भारत के स्वतंत्रता-आंदोलन को मजबूत करने और इस आंदोलन में जापान किस प्रकार से सहायता करे, यह निश्चित करने के लिए मार्च 1942 और जून 1942 में दो सम्मेलन क्रमशः टोक्यो और बैंकाक में आयोजित हुए जिनमें आजाद हिंद फौज के गठन का महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया। 1 सितम्बर 1942 को सिंगापुर में अधिकारिक रूप से इंडियन नेशनल आर्मी (आजाद हिंद फौज) का गठन हुआ।

आजाद हिंद फौज में भूमिका

आजाद हिंद फौज का गठन भारत के स्वतंत्रता-संग्राम के इतिहास में एक अति महत्वपूर्ण घटना थी। दुर्गा मल्ल उन व्यक्तियों में से थे जिनकी आजाद हिंद फौज के गठन में महत्वपूर्ण भूमिका रही। देशप्रेम से भरे हृदय से वह 1942 में न सिर्फ आजाद हिन्द फौज में स्वयं शामिल हुए बल्कि अपने सहयोगियों को भी इसमें आने के लिए प्रेरित किया।

शुरूआत में, दुर्गा मल्ल को विभिन्न गोरखा बटालियनों से स्वयंसेवकों को आजाद हिंद फौज में भर्ती कराने का दायित्व सौंपा गया। बाद में, उनकी देशभक्ति, देश के प्रति उनकी कर्त्तव्य-भावना तथा उनके शौर्य को देखते हुए उन्हें मेजर के रूप में पदोन्नत कर दिया गया।

युद्ध के मोर्चे पर

जब नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के सर्वोच्च नेतृत्व में अस्थायी 'आजाद हिंद' सरकार के गठन के पश्चात् 25 अक्तूबर 1943 को मित्र राष्ट्रों की सेनाओं के विरुद्ध

युद्ध की घोषणा की गई तो आजाद हिंद फौज की विभिन्न शाखाओं के सैनिकों को अलग-अलग मोर्चों पर तैनात किया गया। दुर्गा मल्ल को गुप्तचर शाखा में भेजा गया। कुछ अन्य साथी सैनिकों सहित वह बर्मा की सीमा पार कर तत्कालीन वृहत् असम प्रांत के पर्वतीय क्षेत्र में प्रविष्ट हुए। वहां रसद और गोलाबारूद की कमी तथा विषम भौगोलिक परिस्थितियों के बावजूद, वह आजाद हिंद फौज के रंगून स्थित मुख्यालय को सामरिक महत्व की सूचनाएं भेजते रहे। 27 मार्च 1944 को जब दुर्गा मल्ल शत्रु के शिविरों के बारे में सूचनाएं एकत्र करने के मिशन पर थे, तभी शत्रु पक्ष के सैनिकों ने उन्हें मणिपुर में कोहिमा के निकट उखरूल में पकड़ लिया।

युद्धबंदी और मुकदमा

गिरफ्तारी के बाद, दुर्गा मल्ल को नई दिल्ली स्थित लाल किले में युद्धबंदी के रूप में कैद में रखा गया। सैनिक न्यायालय ने भारतीय सेना कानून की धारा 41 के तहत और भारतीय दंड संहिता की धारा 121 के तहत उन पर मुकदमा चलाया। लाल किले में जिस न्यायालय के समक्ष उन पर मुकदमा चलाया गया, उसने कोर्ट मार्शल द्वारा उन्हें मृत्युदंड की सजा सुनाई। यह वह समय था जब साम्राज्यवादी ब्रिटिश शासक भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष को येन-केन-प्रकारेण दबाने की कोशिश कर रहे थे। इसलिए मृत्युदंड की कार्रवाई पूरी किए जाने के पहले ब्रिटिश अधिकारियों ने मेजर दुर्गा मल्ल को इस बात के लिए राजी करने की कोशिश की कि वह गलती स्वीकार कर लें और उनसे वादा किया कि यदि वह ऐसा करें तो उन्हें माफी दे दी जाएगी। पर ऐसा करना वीर दुर्गा मल्ल की इच्छाओं के विरुद्ध था जिनका एकमात्र उद्देश्य अपने देश को आजाद कराना था। उन्होंने ब्रिटिश शासकों के प्रस्ताव को स्वीकार करने के बजाए फांसी के फंदे को गले लगाना उचित समझा। मनाने के सभी प्रयास विफल हो जाने के बाद अंतिम उपाय के रूप में दुर्गा मल्ल की पत्नी श्रीमती शारदा देवी को कैदखाने में उनके सामने लाया गया। ब्रिटिश अधिकारियों का मत था कि वह अपने पति को माफी मांगने के लिए तैयार कर लेंगी। पर मेजर मल्ल के सामने ब्रिटिश अधिकारियों की एक न चली। इसके विपरीत उन्होंने अपने पत्नी को अंतिम बात कही, "शारदा, मैं अपना जीवन अपनी मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए त्याग कर रहा हूं। तुम्हें चिंतित और दुखी नहीं होना चाहिए। मेरे शहीद होने के बाद करोड़ों हिन्दुस्तानी तुम्हारे साथ होंगे। मेरा बलिदान व्यर्थ नहीं जाएगा। भारत आजाद होगा। मुझे विश्वास है कि अब यह थोड़े समय की बात है।"

प्राणों की आहुति

15 अगस्त 1944 को महान देशभक्त वीर दुर्गा को लाल किले से दिल्ली सेन्ट्रल जेल लाया गया। दस दिन बाद 25 अगस्त 1944 को उन्हें फांसी के तख्ते पर चढ़ा

दिया गया। इस प्रकार भारत माता का एक और सपूत शहीद हो गया जिसने स्वतंत्रता की वेदी पर अपना अमूल्य जीवन न्यौछावर कर दिया। दुर्गा मल्ल हमारे बीच अब नहीं हैं परन्तु उन्होंने एक सार्थक जीवन जीने के बाद मात्र 31 वर्ष की आयु में अपने प्राणों की आहुति दी और अमर हो गए।

शहीद दुर्गा मल्ल

-चित्रात्मक झांकी-

युवा दुर्गा मल्ल

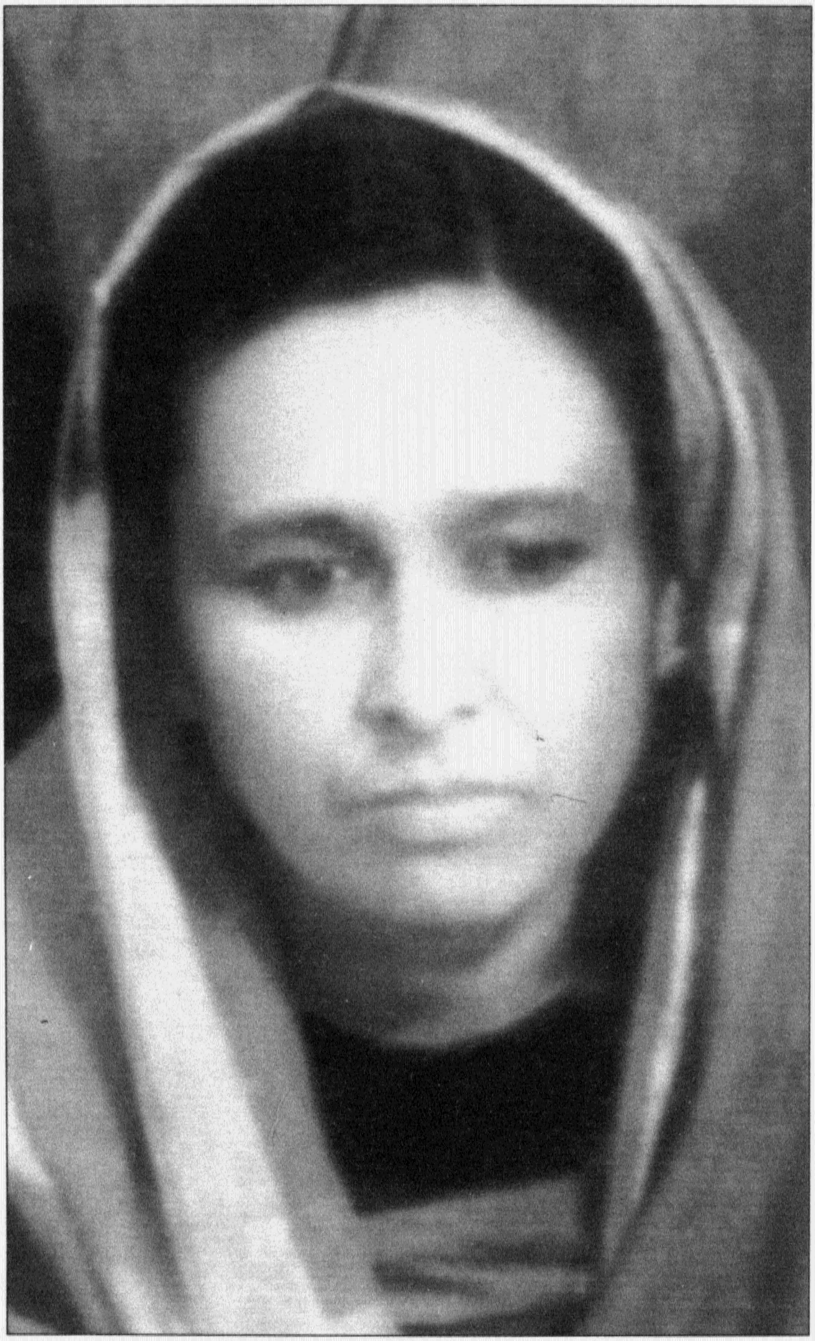

शहीद दुर्गा मल्ल की पत्नी शारदा मल्ल (1927–1990)

दिल्ली जिला जेल स्थित स्मारक (स्थल) जहां शहीद दुर्गा मल्ल को अंग्रेजों द्वारा 25 अगस्त 1944 को फांसी दी गई थी

उस स्थान पर बना शहीद स्तम्भ जहां दुर्गा मल्ल को अंग्रेजों द्वारा फांसी दी गई थी

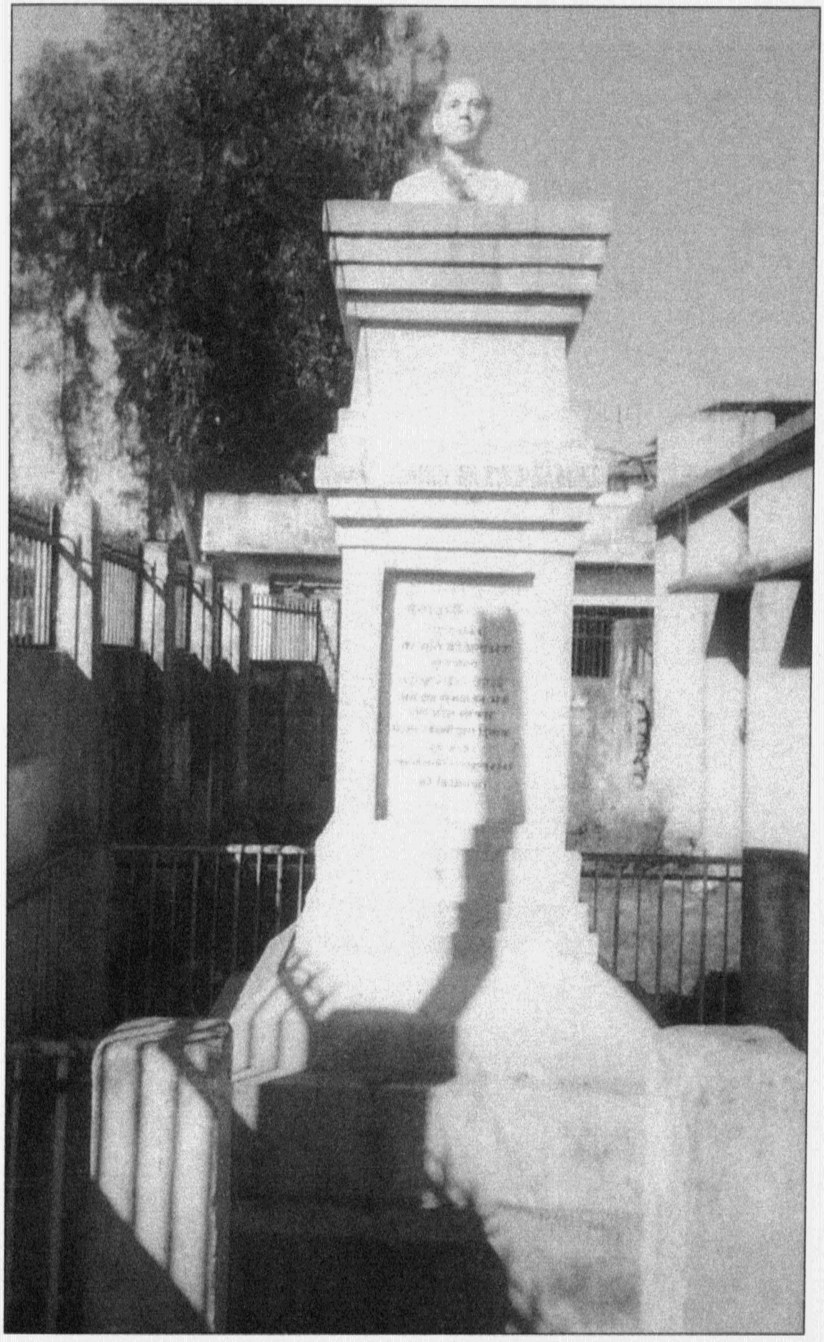

उत्तरांचल के देहरादून जिले के डोईवाला में नगर समिति भवन परिसर में स्थापित
शहीद दुर्गा मल्ल की प्रतिमा

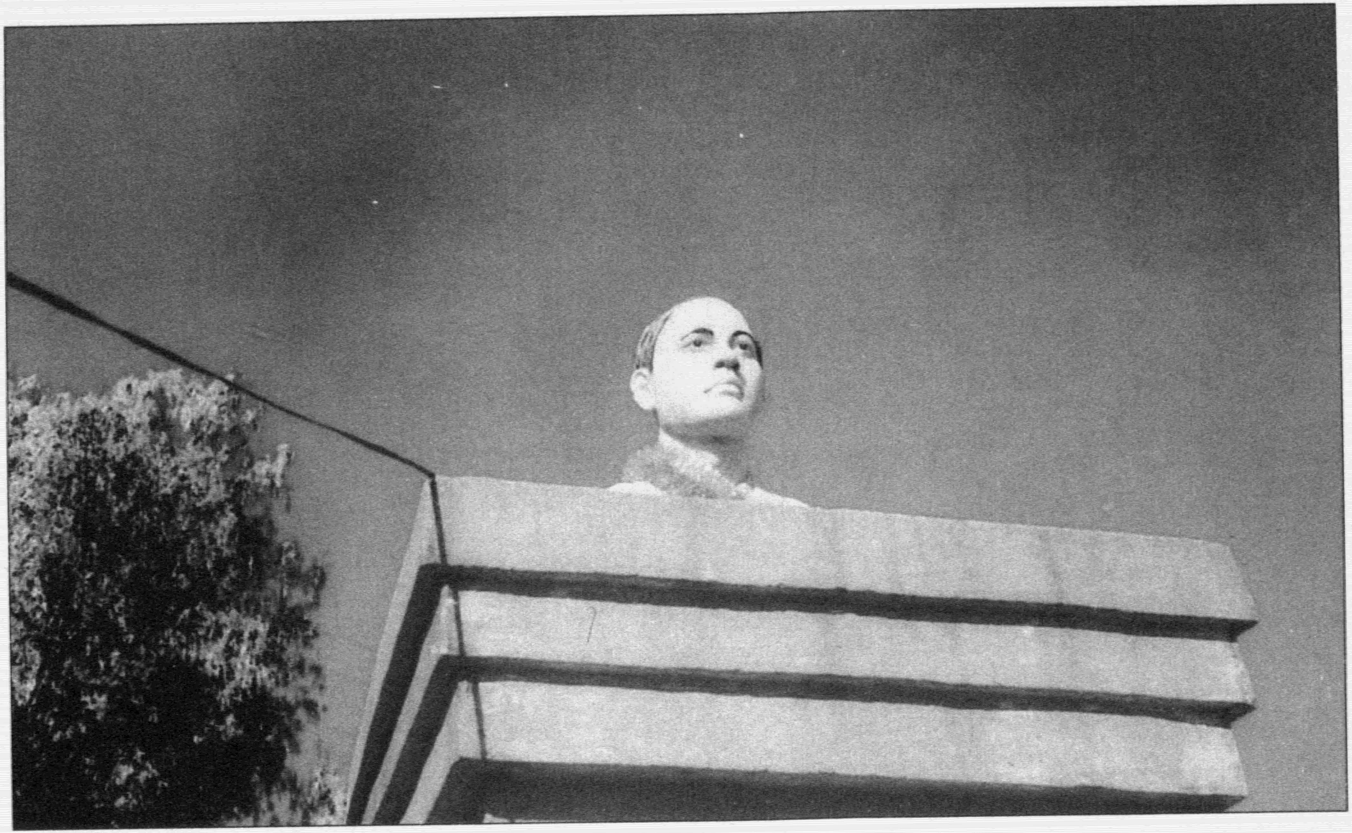

उत्तरांचल के देहरादून जिले के डोईवाला में शहीद दुर्गा मल्ल की प्रतिमा

हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले में धर्मशाला में डारीगांव स्थित शहीद स्मृति वाटिका में लगाई गई शहीद दुर्गा मल्ल की प्रतिमा का अग्रभाग

हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले में धर्मशाला में डारीगांव स्थित शहीद स्मृति वाटिका में शहीद दल बहादुर थापा (आजाद हिन्द फौज के कप्तान) की प्रतिमा के साथ शहीद दुर्गा मल्ल की प्रतिमा (बाएं)

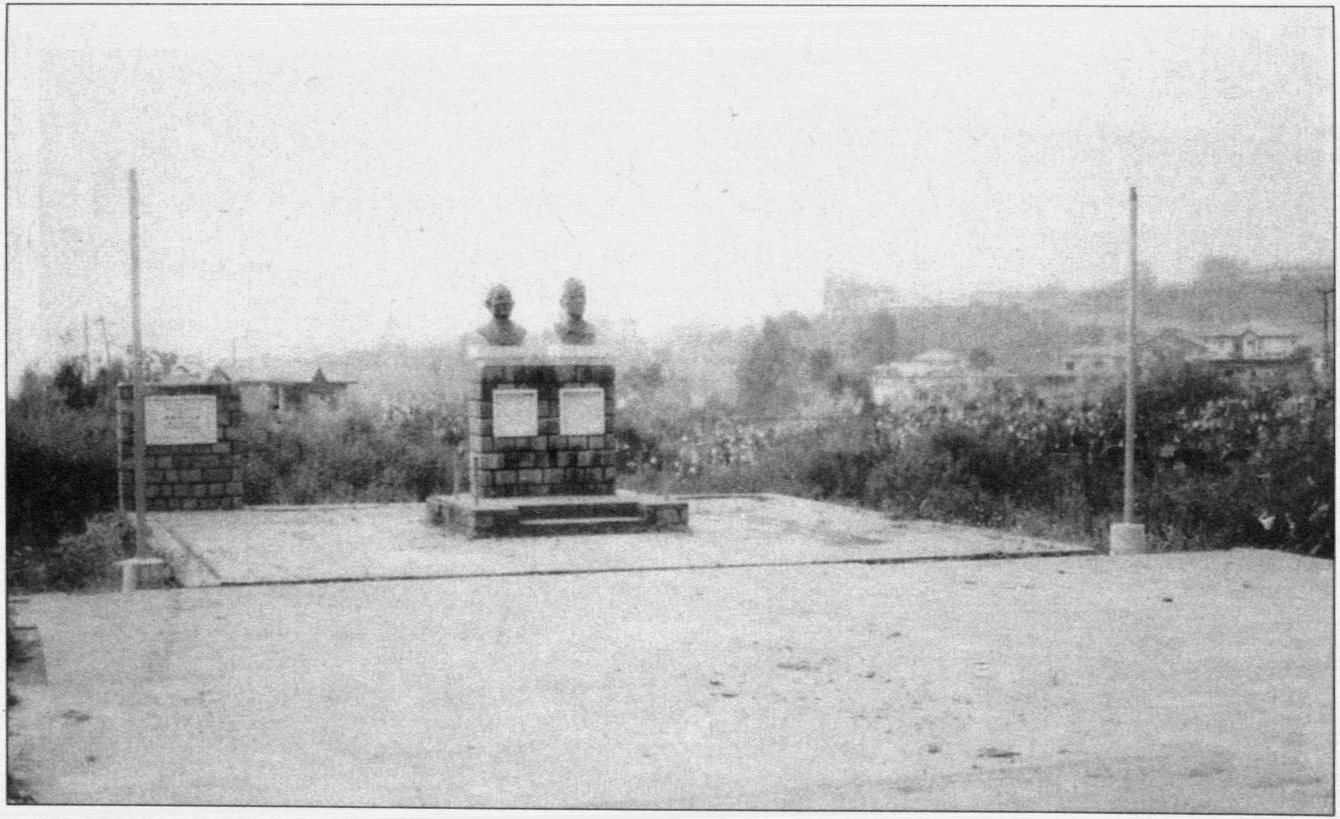

हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले में धर्मशाला में डारीगांव
स्थित शहीद स्मृति वाटिका का दृश्य

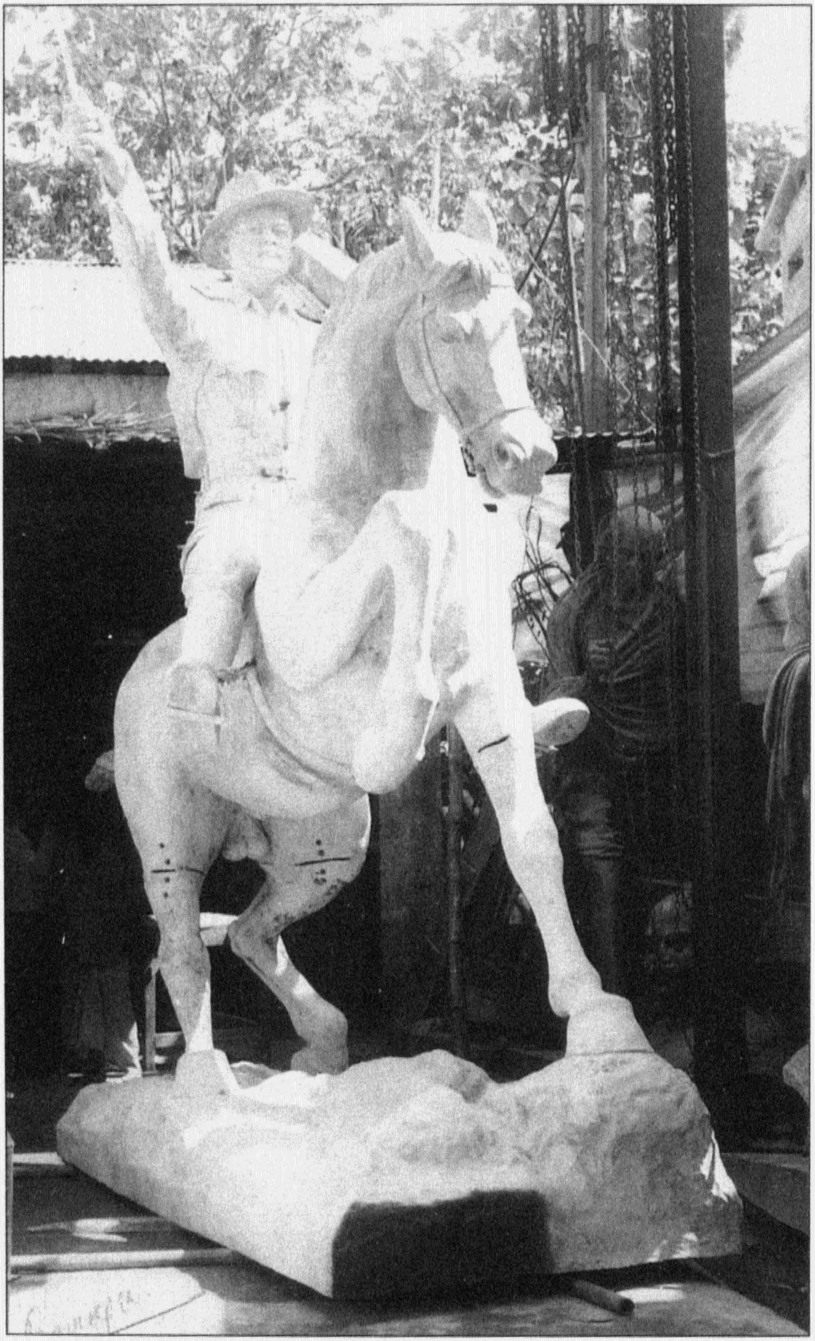

शहीद दुर्गा मल्ल की प्रतिमा का मॉडल जिसे संयुक्त संसदीय समिति द्वारा
27 जून 2003 को अनुमोदित किया गया

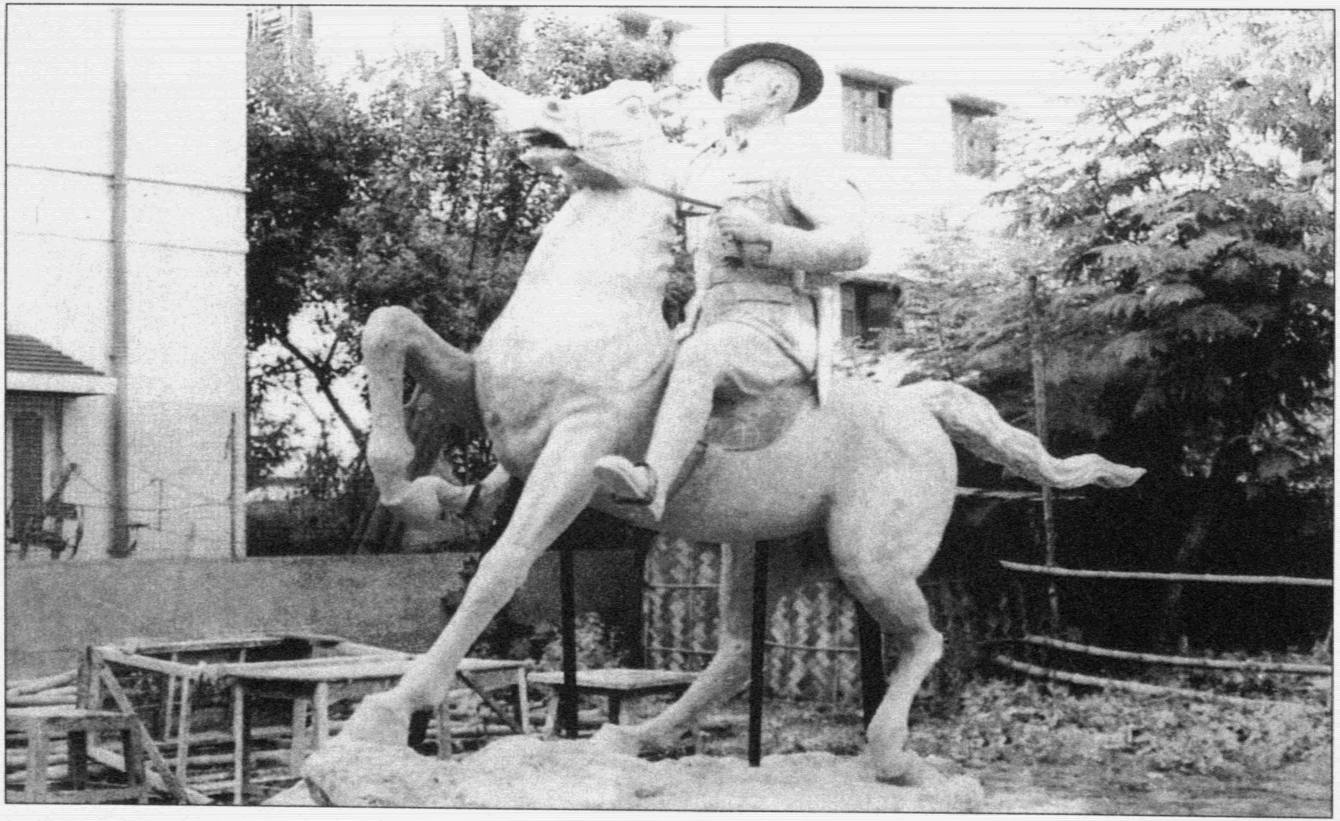

शहीद दुर्गा मल्ल की कांस्य प्रतिमा